

۱. ہی دیکھ دلی تھا

۲. یاد جان سند

۳. بیکھر دھن

۴. سر تو کی شہر

۵. اوسے نام کی دل

۶. آد ائے سدر

۷. تو کھن سی

۸. سائے سائے

۹. دسہ بھاؤ

۱۰. دیکھو عین

۱۱. سیرہ جا

۱۲. کس مہک

۱۳. خانہ دبانہ

۱۴. یاد گل جان

۱۵. خوب دیا

۱۶. زویر ہر

۱۷. یاد دل

۱۸. دس آ

۱۹. کو

۲۰. میاں

۲۱. کر

۲۲. سنہ

۲۳. سنہ

دو چھوٹے چار
اوسے نام کی دل
آد ائے سدر
تو کھن سی
سائے سائے
دسہ بھاؤ
دیکھو عین
سیرہ جا
کس مہک
خانہ دبانہ
یاد گل جان
خوب دیا
زویر ہر
یاد دل
دس آ
کو
میاں
کر
سنہ
سنہ

20/84

KRi - 414

ॐ नमः त्रिपुर सुन्दर्यै ।

I

—: लघुस्तवः :—

हेन्द्रस्यैव शरासनस्य दधती मध्ये ललाट प्रभां
शैवलीं कान्तिं मतुषा गोरिव शिरस्यालम्बती सर्वतः ।
लघासौ त्रिपुरा हृदि द्युतिरिवोष्णांशोः सदाहः स्थिता
क्षिन्धा नः सहसा पदै स्निभिरद्यं ज्योतिर्मयी वाङ्मयी ॥२॥

اندازہ سنری کمان ہش دفت منزل لاس دارانی
چند ریس ہش سفید ورن دقت ہش پٹھیس چمکانی
ہر دین میں سر پہ سنری پاٹھی چمکوئی رفتی روزانی
سوی تہ پور سنری سانس ہر دین منزل روزتن
سوی جوتی سروپ سرسوتی سروپ بنقد اسی ٹھیکتن
تہرل یدن ہندی اوگرہ کن تری ودھیاپ سانی ژٹنت

या मात्रा त्रुपसीलता तनुलसत्त स्तिनि स्पर्धिनी
वाग्बीजे प्रथमे स्थिता तव सदा तां सम्महे ते वयम् ।
शक्तिः कुण्डलिनीति विश्वजनन व्यापार बहुद्यमा
ज्ञात्वेयं न पुनः स्पृशन्ति जनने गर्भेऽर्भकत्वं नराः ॥२॥

یو سے زاوجہ تری لہجی ہنری تادی ہش بیتھ چھ پھیلاو
سارہ تری دار زاوج بنقد اسے کڈلنی شکمتی چھو نارہ
بیتھ اکھس منزل کلا یو سے ٹھیکت چھی آسانی
سوی کلا جگت پیدہ کرنس پٹھ آسونی او دیوگی
امہ کی دھیان میں ہش زانی کر سنا کری ہش
گر بھ بہاوس شرمی بہاوس اده کرنی بیہ ہش

दृष्ट्वा ममकारि त्वस्तु सहसा छे से दति
विनाकृत वशादपीह वस्दे विसुं वि-

तस्यापि ध्रुवमेव देवि तरसा जाते तवानुग्रहे
वाचः सूक्ति सुधारसद्वय मुचो निर्यान्ति वक्त्राम्बुजात् ॥३॥

ہی دیوی دید کا نہ خوف ناک چیز چھت جلد جلد
یہی مجھ ترس تی منتر بنی ترس چون انو گرہ
کری اترائے بندہ روتی سیدی مطلب ترس تی حل
نیری وانی تسندی کو کہ نشہ چھٹہ ترے کوی سو سرہ

यन्नित्ये तव कामराजमपरं मंत्राक्षरं निष्कलं
तत्सारस्वतमित्यवैति विरलः कश्चिदुधाश्चेदुवि ।
आख्यानं प्रति पर्व सत्य तपसो यत्कीर्तयन्तो द्विजाः
प्रारम्भे प्रणवास्पद प्रणयिता नीत्वोच्चरन्ति स्फुटम् ॥४॥

ہی تری روپی دیدم منتر چون کاہر راجہ نادہ آسون
سوئی گوسا سو ترے بیج اکھر ست پ ہی ایشی چھی پران
سوئی منتر شکل پٹھ کاہر پتھوی پٹھ چھو زانہ ورن
او تم پر ورن پٹھ برمن میوک دیا کھیاں چھی کران
وانہ ناوت او مچہ جاسے پٹھ ہی منتر او شیچارن کران

यत्सद्यो वचसा प्रवृत्ति करणे दृष्ट प्रभावं बुधैः
तार्तीयो क सुहं नमामि मनसा त्वद्वीजमिन्दु प्रभम् ।
अस्त्वोर्वाऽपि सरस्वती मनुगतो जाड्याम्बु विच्छिद्य तयो
गोः शब्दो गिरि वर्तते स नियतं योगं विना सिद्धिदः ॥५॥

تیری ہی اکھر وک نہا وانی کھنس پٹھ کال و چھان
سروپ پٹھ سو لوگ دانائے روتی سیدی دیوان
تھ اکھر سن چندرہ دتی سستہ چھنس من کن پر نام کران
مور کھ روپی پاسنس گلند بابت وارڈ فانی اگن بن کران

एकैकं तव देवि बीजमनघं सव्यञ्जनाऽव्यञ्जनं
कुटस्थं यदिवा मृथकं क्वनगतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात् ।
ये यं काम मयेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं
जप्तं वा सफलं करोति सहसा तं तं समस्तं वृणाम ॥६॥

ہی دیوی ترس پری چون بیج اکھر بد کوئی
ہی ہی کامائے بابت ترس ترس اسی جہان
دو شہرے روئیں با دو شہرے اترائے من کران
ترس ترس اوہ سر من
۱۱

वामे पुस्तक धारिणी मुभयदा साक्षिप्रजं दक्षिणे
भक्तेभ्यो वरदान पेशल करं कर्पूर कुन्दो ज्ज्वलाम् !
उज्जुम्भाम्बुजा पत्र कान्त लयन स्निग्ध प्रभालोकिनी
ये त्वामुम्ब न शीलयन्ति मनसा तेषां कवित्वं कुतः ॥१॥

कहूँ स तू तू नर प्रोत्तम तू ही तू ही
या कहूँ तू ही तू ही तू ही तू ही
तू ही तू ही तू ही तू ही तू ही
तू ही तू ही तू ही तू ही तू ही

ये त्वां पाण्डुर-पुण्डरीक पल्ल स्पष्टाभिराम प्रभाम्
सिञ्चन्ती मुमुक्षु द्वैरिव शिरो ध्यायन्ति मूर्ध्नि स्थिलाम् ।
अश्रान्तं विकटस्फुटाक्षरपदा निर्याति वक्त्राम्बुजा-
तेषां भारति ! भारती ह्रस्वरि त्वल्लोल लोलोर्भि वत् ॥२॥

तू ही तू ही तू ही तू ही तू ही
तू ही तू ही तू ही तू ही तू ही
तू ही तू ही तू ही तू ही तू ही
तू ही तू ही तू ही तू ही तू ही

ये सिन्दूर पराग पुञ्ज पिहितं त्वत्तेजसा द्यामिमा
भुवी चापि विलीनयावकरस-प्रस्तारमग्नमिव
पश्यन्ति क्षणमाप्य नन्य मनसा स्तेषा मनङ्ग-ज्वर-
क्लान्तास्त्रस्त-कुरङ्ग-शावक दृशो वश्या भवन्ति स्फुटम् ॥३॥

तू ही तू ही तू ही तू ही तू ही
तू ही तू ही तू ही तू ही तू ही
तू ही तू ही तू ही तू ही तू ही
तू ही तू ही तू ही तू ही तू ही

चञ्चत्काञ्चन कुण्डलाद्भुत धरा मा बद्ध काञ्चीसजं
ये त्वां चेतसि तद्भुते क्षणमपि ध्यायन्ति कृत्वा स्थितिम् ।
तेषां वेश्मसु विभ्रमाद् हरहः स्फारी भवन्त्यश्विरं
माद्यत्काञ्जर कर्णताल तरलाः स्थैर्यं भजन्ते श्रियः ॥ १० ॥

चमकने सुन्दर छत्रे नवाजी छत्रे सन्धरे लाकानी
सुन्दर सुन्दर ताकरी प्रदले वन चकक कस गन्धानी
तस रोजी शिखर शिखर गहस रश्मि तामत लुखी
सुन्दर सुन्दर ताकरी प्रदले वन चकक कस गन्धानी
आभक्त्या शशिखण्ड मण्डित जटा जूटा नमुण्ड सज
बन्धुक प्रसवारुणाम्बर धरा प्रेतासनाध्यासिनीम् ।
त्वां ध्यायन्ति चतुर्भुजा त्रिनयना मापीन नुद्धस्तनौं
मध्ये निमग्न वलित्रयाङ्गित तनुं त्वरूप संवित्तये ॥ ११ ॥

शुभे भुजौ पानी जमे त्रुवा नाल छत्रे कल मस
बन्दु प्रदले रङ्ग रङ्ग प्रदले रङ्ग रङ्ग प्रदले रङ्ग रङ्ग
चमकने सुन्दर छत्रे नवाजी छत्रे सन्धरे लाकानी
सुन्दर सुन्दर ताकरी प्रदले वन चकक कस गन्धानी

जातोऽप्यल्प परिच्छेदे क्षितिभुजा सामान्य मात्रे कुले
निःशेषावनि चक्रवर्ति पदवीं लब्ध्वा प्रतापेऽक्षतः ।
यद् विद्याधर वृन्द वन्दितपदः श्रीवत्सराजोऽभवत्
देवि! त्वच्चरणाम्बुज प्रणतिजाः सोयं प्रसादोदयः ॥ १२ ॥

कान्हे राजा म्मोली कस म्मोली सन्धरे लाकानी
तस चकक कस गन्धानी
चमकने सुन्दर छत्रे नवाजी छत्रे सन्धरे लाकानी
सुन्दर सुन्दर ताकरी प्रदले वन चकक कस गन्धानी

चण्डि। त्वच्चरणाम्बुजा चेतसि विविधौ बिल्वदलोल्लुण्ठन
त्रुद्धयत्काञ्जर कर्णताल तरलाः स्थैर्यं भजन्ते श्रियः ।

ते दण्डांकुशचक्रचामकुलिश श्रीवत्स मत्स्यांकितैः
जायन्ते पृथिवीभुजः कथामिवाम्बोज प्रभैः पाणिभिः ॥ १३ ॥

ہی زندی چانی زرن پوزایہ پٹھیس انانی
لنگ تیر کمانی ہند نشاندہ لیسر کندی شمشیت مسانی
بلکہ پوش ژرٹ ژرٹ کندی سیت اٹھیس چھی ڈھانی
تھہ شمش پش بیر زخمہ راجہ ہاراج بنانی

विप्राः क्षोणिभुजो विशस्तदितरे शीराज्य मध्वासवैः
त्वां देवि! त्रिपुरे! परापरमयीं संतप्या पूजाविधौ !
यां यां प्रार्थयते मनः स्थिरधियां तेषां त एव ध्रुवं
तां तां सिद्धिमुवाप्नुवन्ति तरसा विघ्नैरविघ्नी कृताः ॥ १४ ॥

برہمن راجہ پوش یاشد رچانی پوزا کرانی
شرہا یرکن کی گنشرہا مکن چھک غروترن دیوانی
دودھ گویا چھ شراب پوزا کئے کن ژہ ارین کرانی
بے روک پاٹھ وگنہ رستوی سدھی سو پراواتی

शब्दानां जननी त्वमत्र सुवने वाग्वादिनीत्युच्यते
त्वत्तः केशववासव प्रभृतयोऽप्याविर्भवन्ति स्फुटम् ।
लीयन्ते खलु यत्र कल्प विरमे ब्रह्मादयस्तेऽप्यसौ
सा त्वं काचिदुचिन्त्यरूपमहिमा शक्तिः परा गीयते ॥ १५ ॥

ہی ماما تر پٹھوس نمر شبد روپ ژہ آسانی
ژری نش کیشو اند راجہ دیوتا پرکٹ بنانی
جگتس منر ناؤ چو لوی سر سوتی چھی وٹانی
کلپیر انٹس برہما دک ژری لشہ لے گڑھانی
کوستانہ نہ سرنی ہما بس تہنر شکتی چھی وٹانی

देवानां त्रितयं त्रयी हवभुजा शक्तित्रयं त्रिस्वरा-
स्त्ये त्र्योक्तं त्रिपदी त्रिपुष्करमथो त्रिब्रह्मवशात्तयः ।

यत्किञ्चिज्जागति त्रिधा निवामितं वस्तु त्रिवर्गात्मकं
तत्सर्वं त्रिपुरेति नाम भगवत्यन्वेति ते तत्त्वतः ॥

دلہن منتر ترلوئے دیوڑی اگن منتر تری گن تری
شکھن منتر تری کھن تری سرن منتر ترلوئے تری
بوہ بوہ سوہ گائری تری ست پت آند تری
سوسو روي پتہ پتہ پیکان تری
لक्ष्मी राजकुले जया रणभूषि होमद्वारी महेश्वरी
आव्याद द्विप सर्व भाजि श्वरी कात्तार दुर्गे भारी
भूत प्रेत पेशाच जम्बुक भये स्मृत्वा महा मेरु
व्यामोहे त्रिपुरा तरन्ति विषद-स्तारां च तेय हवे ॥

رازہ گھن منتر زہنجی جسے تھ منتر زن بھوی
الطوتی طیانہ روپی نفو کا لورن منتر شکاری تری
کوبن پٹھ چک تھ درگاشاچن نشہ بھروی
یم الطہیان ھیان چلن سرن تھ زہ پیدا در کانی

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालि
मातङ्गी विजया जया भगवती देवि शिवा शाम्भवी
शक्ति, शंकर बल्लमा त्रिनयना वाग्वादिनी मेरवी
ह्रींकारी त्रिपुरा परा परमयी माला कुमारी त्यति ॥

مایتری گنڈلی تری کربا تری مدوتی تری
کالی تری کلاری مانی تاسگی تری
وچا تری جیا تری اختیار و اجینہ تری
چت سروپ تری سامر تھ تری شامبھوی شکتی تری
شکر سنر ناٹھ چک تری سروتی بھروی تری
ہریمہ شکل پڑا پڑا تری پڑا تری انا ایم روپ تری

आइ पल्लवितै, परस्परयुतै; द्वित्रि क्रानावाक्षरै
काद्यैः शान्तगतै; स्वरादिमिथो ह्यन्तैश्च तैस्तैः स्वरै

नामानि त्रिपुरे! भवन्ति खलु यान्यत्यन्त गुह्यानि ते
तेभ्यो भैरवपत्नि विशति सहस्रेभ्यः परेभ्यो नमः ॥१६॥

अ पृष्ठ सारनी अकरोन दूरी त्रयी कर्म मनात
क पृष्ठ सारनी त्रयी त्रयी कर्म मनात
है त्रयी त्रयी दूरी त्रयी त्रयी कर्म मनात
है त्रयी त्रयी दूरी त्रयी त्रयी कर्म मनात

बोद्धव्या निपुणं बुधैः स्तुतिरियं कृत्वा मनस्तद्वत्
भारत्या त्रिपुरेत्यनन्य मनसा यत्राद्यवृत्ते स्फुटम् ।
एक द्वित्रिपद क्रमेण कथित स्त्वत्पाद संख्याक्षरैः
मन्त्रोद्धार विधि विशेष सहितः सत्संप्रदायान्वितः ॥२०॥

जान्नी च्छोय कालन यी त्रयी कर्म मनात
पमान पादन मन्दी शमार कियो अकरोन मनात
गुडनिके दूरी त्रयी त्रयी कर्म मनात
रनी समिपदा त्रयी त्रयी कर्म मनात

सावद्यं निरवद्यमस्तु यदि वा किं वानया चिन्तया
नूनं स्तोत्रमिदं पठिष्यति नरो यस्यास्ति भक्तिस्त्वयि ।
संचिन्त्यापि लघुत्वमात्मनि दृढं संजायमानं हठात्
त्वद्भक्त्या मुखरी कृतेन रचितं यस्मान्मयापि ध्रुवम् ॥२१॥

नन्दाय त्रयी त्रयी कर्म मनात
स त्रयी त्रयी कर्म मनात
पन्तर पान्स लोभन नित मन्ती दूरी त्रयी कर्म मनात
जान्नी च्छोय कालन यी त्रयी कर्म मनात

चर्चो स्तवः

2

ॐ नमः त्रिपुर सुन्दर्यै :

आनन्द सुन्दर पुरन्दर मुक्त माल्यं
मौलौ हवेन निहितं महिषासुरस्य ।
पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जु-
मञ्जीर शिञ्जिल मनोहर मन्त्रिकायाः ॥ १ ॥

یاد چانی سند رائند دایک اند راجن ترا دیتھ تخت مال
بیم سیت زیر دیت مہاشا سترئی کھنہ ماترس منروٹ سوپا تال
بہوئی رونیہ یاد چون روزتن مہ ہر دیس
یٹھ بہ امبکائی بوزہ شرونیہ شرونیہ تال
سوی مندر یاد بتن مہ سیتھ جے کارک مر باوٹن کمال

सौन्दर्य विधममुवो सुवनाधिपत्या-
संपत्ति कल्प-तरव स्त्रिपुरे ! जयन्ति ।
एते कवित्व कुसुद प्रकराव बोध-
पूर्णन्दव स्त्वयि जागज्जननि प्रणामाः ॥ २ ॥

یہ پرنام سندریکہ ولا اسک جاتے تھ تہندی شمار کر نہ ایوان
ترن بون ہندی راج سمپدا یہ ہندی کلپہ در کھ ہی ہم پرنام گھی بنان
یہ پرنام کوتائی روپی کدہ پوشم پھولرا ونہ بایت چند رمہ گھی بنان
ہی بگت زنی و تنے تھ مہیانی تھ ہی پرنام سپس بہ تری کن کران

देवि ! त्वुत्ति न्धतिकरे कृत बुद्धयस्ते
वाचस्पति प्रभृतयोऽपि जडी भवन्ति ।
तास्मा त्रिसर्ग जडिमा कतमोऽह मत्र
स्तोत्रं तव त्रिपुर तापनिपति ! कर्तुम् ॥ ३ ॥

چانی توتا کرنس پٹھ چھو نہ سامر تھ
ہی ترن تاپن گالوینہ چھس مور کہہ بہ آستھ
برہسپت تہ دیوتا جڈ بنا فی !
کتہ سامر تھ بہ کرہ توتا چانی

मातः ! तथापि भवतीं भवतीब्र ताप
विच्छिद्ये स्तुति महार्णव कर्णे धारः ।
स्तोतुं भवानि ! स भवच्छरणार विन्द -
भक्तिग्रहः किमपि मां मुखरी करोति ॥ ४ ॥

ہی مانا زنت بی ہمارہ کٹھن دُوکھ
ہیئے توتا یقہ سمار ساگر س
چٹنہ باپت کروم توتا یئی چانی
ہی میسانی ناوبیہ بانج میانی
بکواسی بیہو چھس توتا کرانی
چانی یاد مکہ کے لوچہ آوشہ

सूते जगन्ति भवती भवती बिभर्ति
जागर्ति तत्क्षयकृते भवती भवानि ।
मोहं भिनत्ति भवती भवती रुणाद्वि
लीलायितं जयाति चित्रनिदं भवत्याः ॥ ५ ॥

برہماروپہ جگتس کران پیسہ تری
رودرہ روپہ ہمارا شخس کران تری
ویشنوروپہ پالن کران تری
مُوہ دیوان تہ بیہ تھتی گالان تری
جے کارا سنے چان لیلا یئی
لیلائے میر چانی چھوس دچھان رنگہ رنگہ

यस्मिन्मनागुपि नवाम्बुजपत्र गौरि !
गौरि ! प्रसादमधुरां दृश मादधासि ।
तस्मिन्निरन्तरं मनङ्ग-शराव कीर्णाः -

सीमन्तिनी नयन सन्ततयः पतन्ति ॥ ६ ॥

61
 امتره نظر چھک تره تراوانی
 نامدیو کس زن چھوش گز هانی
 ہی گوری پیموشه رنگه صفایس
 تس پشه ننتی نیم ساری یو گنتی

मृध्वीभुजोऽप्युदयन प्रवरस्य तस्य
 विद्याधर प्रणति चुम्बित पादपीठः ।
 यच्चक्रवर्ति पदवी प्रणयः स एष
 त्वत्पाद पङ्कजरजः कणजः प्रसादः ॥ ७ ॥

71
 وديادرتہ ديو تس چھی آدین
 چانی پاد گردی ہندی اوگرہ کن
 اودین راجس کھراوی پیٹھ کران میٹھ
 چکر درتی محمد اوس تم پراو مت
 त्वत्पाद पङ्कजरजः प्रणिमात पूतैः
 युण्यै रुनल्प मतिभैः कृतिभिः कवौन्दैः ।
 क्षीर क्षपाकर दुकूल हिमाव दाता
 कैरव्यवापि भुवन त्रितयैऽपि कीर्तिः ॥ ८ ॥

81
 ہنری گردی پٹھ کریمو پر نام
 دانا اؤتم کوی پراوتمو نام
 صفا بٹھ ترن لونن منتر بٹے نیکنام
 ہی دیوی پچان پیموشه پادون
 تم بٹے نرمل اؤتم تیز بوز سس
 دودھ چندرہ ریشم دستر بے شینہ پاٹھ

कल्पद्रुम प्रसव कल्पित चित्रपूजा -
 मुद्रायित प्रियतमा मद रक्त गोतिम् ।

नित्यं भवानि ! भवती मुयवीणयन्ति
विद्याधराः कनकशैल गुहागृहेषु ॥ ६ ॥

9
کلیہ در کھ پوشو سیت چانی پو بجا لولہ سیت چھ گیوان چانی گیت
نت سمیر کے گفازہ وپی گھرن منسر وایان و دیادھر سوڑتہ ساز کیت

लहमीवशी करण कर्मणि कामिनीना -
माकर्षण व्यतिकरेषु च सिद्धमन्त्रः ।
नीरन्ध्र मोह तिमिर च्छिदुर प्रदीपो
देवि ! त्वदङ्घ्रि जनितो जयति प्रसादः ॥ १० ॥

10
چانی پر رتہ مکھ سیوانے ہند پر ساد وش کران لختی تہ بیہ سدھین
شکتی سو پر وان موہ روپی گینہ انیہ گٹہ گالان ژانگی سیت زن

देवि ! त्वदङ्घ्रि नखरत्न भुवो मयूखाः
प्रत्यग्र मौक्तिक रुचो मुदमुद्बहन्ति ।
सेवानति व्यतिकरे सुरसुन्दरीणा -
सीमन्तसीमि कुसमस्तव कायितं वै : ॥ ११ ॥

11
راج بوانی چانی ژرن ہند نہ رتن مختہ دفقی داران زن کرن
لوگنتی یلہ پرن پیوان ژہ ژرن پٹھ نہ چمکہ پر زلان مس تہ سئمہ متن

मूर्ध्नि स्फुरत्तुहिन दीधिति-दीप्ति दीप्तं
मध्ये ललाठममरायुध रश्मि चित्रम् ।

हृच्चक्रं युम्बि हृतमुक् कणिकानुरूपं
ज्योति र्यदेत दिदमम्ब ! तव स्वरूपम् ॥ १२

12/1
ماترہ مستک چن در زن پرزلون رام رام بدرنیہ دونی چمکون
ہر دین منراگنی بیجوتی سروپ زن مانچون سروپ چھوی پرکاش اسون

सिन्दूर पासु पडल च्छुरितामिव द्या
त्वत्तेजसा जतुरसा स्नापितामिवोर्वीम् ।
यः पश्यति क्षणमपि त्रिपुरे विहाय
ब्रीडा मुडानि मुदृशस्तमनु द्रवन्ति ॥ १३ ॥

13/1
سندری گردی شستی جرمت اکاش لاجھ رنگ پر تھوی شران کر تھ زن
یئس وچھی کھنہ ماترس لاج تراوت تیس سدھی مانچ بلوانی پتہ دورن

मातः ! मुहूर्ते मुपि यः स्मरति स्वरूपं
लाक्षारसा जसरतन्तु निभं भवत्याः ।
ध्यायन्त्यतन्मनसस्तमनङ्कतसाः
प्रद्युम्न सीम्नि सुभगत्व गुण तरुण्यः ॥ १४ ॥

14/1
ہی ماتیس مہورتس دھیان کری چون سروپ لاجھی رنگہ تار سمان
سندر جوان اچھہ رچھہ نہ ڈولونی منہ سبہ کامنائی تاد پچھہ تس چھی سمران

आधार मारुत निरोध वशेन येषां
सिन्दूर रज्जित सरोज गुणानुकारि ।
दीप्तं हृदि स्फुरति देवि ! वपु स्वदीप्यं

ध्यायन्ति तानिह समीहित सिद्ध साध्याः ॥ १५॥

مولادارک پران بسد کر تھ یمن
سندری بہت رنگت پیموش زن
ہر دس منز اتھ پیموش پٹھ
جون سروپ باسان رات کہو دن
متنی پرشن ہند چھی دھیان داران
سدھ سادھ دیوتا تہ بیر ست جن

ये चिन्तयन्त्यरुण मण्डल मध्यवार्ति
रूपं तवाम्ब! नवयावक पङ्क विङ्गम् ।
तेषां सदैव कुसुमायुध बाण भिन्न -
वक्षःस्थला मुगदशो वशगा भवन्ति ॥ १६॥

سر بہ منڈ لکہ پرکاشہ ووزلی رنگہ سس بیہ
لاچھی رنگہ سس یم چون دھیان داران
کامد پوسندی تیرہ چچہ وچھ سسہ
اچھ رچھ تمن ماتحت چھی روزن

रूपं तव स्फुरित चन्द्र मरीचि गौर -
मालोकते मनसि वागुधिदैवतं यः ।
निरसीम साक्षिरचनामृत निर्भरस्य
तस्य प्रसाद मधुराः प्रसरन्ति वाचः ॥ १७॥

یم پرشن منس منز چند رہباٹھ چمکون
سر سوتی روپہ چون دھیان داران
حدروس دانی مدر امرت بھر تھئی
نیری تمن نزل پرواہ ہیو زن

शार्वाणि। सर्व जन वन्दित - पादपद्मे।
पद्म च्छद च्छवि विडम्बित नेत्र - लक्ष्मि।

निष्पाय भूर्ति जन मानस राजहंसि !

हंसि त्वमापदमऽनेकविधां जनस्य ॥ १८

ی پاپ گالونی ژئی پاو کلن
ساری جیو چھی پر نام کرائی
پیسو شہ برگہ کے دفتری ہند پاٹھ
چائی نتر کمل چھی شو بھائی
شدھ منٹس چھک چت ساگر منتر
راجہ منٹس ہنس زن ژہ روزانی
ژئی چھک سادھکس نانا پرکارک
دو کہ تہ داد آپدا دور کرائی

इच्छानुरूप मन्तुरूप गुण - प्रकर्श

सङ्कुर्वणि ! त्वमनुसृत्य यदा विभर्षि ।

जायेत स त्रिभुवनैक गुरु-स्तदानो

देवः शिवोपि भुवनत्रय सूत्रधारः ॥ १९।

ہی شکر شنی پننے یژھائے
گی چھک تر گن سروپ پانہ داران
بلہ ہی دہوی ترن بونن ہند
کیول گورو شیونا تھ چھو ایدان
آدہ سوی شیمبو ترن بھونن ہند
نمود پاٹھ سوتر دارہ بنان

योयं चकास्ति गगनार्णव रत्नमिन्दु -

योयं सुरासुरगुरुः पुरुषः पुराणः ।

यद्वाम मुर्धं मिद मन्धक - सूदनस्य -

देवि ! त्वमेव तदिति प्रतिपादयान्ति ॥ २०

کاشہ مدرس منتر زین یوسہ
شو بھا ژندر س چھئے انانی
یون تہ اسرین گورو چھہ اسونیه
بھگوانس شکھتی دیوانی
چھک ژئی بی چھوان سدھ بنانی
یوسہ مہادیو منتر چھہ اردانگی سوی

ध्यातासि हैमवति येन हिमांशुरग्नि -
 मालाऽमलघुति-रुक्लमष मानसेन ।
 तस्याऽविलम्बमऽनवद्यमनल्प कल्प -
 मऽल्पैर्दिनैः सृजासि सुन्दरि! वाग्विलासम् ॥ २१ ॥

یُس سُری چون دھیان نرمل کرئو سُس چند رُس سمان اندرہ شدہ منہ کن
 ہی سدری تش ترہ جھٹ پٹ کران پیرہ سرسوتی ہند و کاس انو گرہ کن

त्वां व्यामिनीति सुमना इति कुण्डलीति
 त्वां कामिनीति कमलेति कलावतीति ।
 त्वां मालिनीति ललितेत्यऽपराजितेति
 देवि! स्तुवन्ति विजयेति जयेत्युमेति ॥ २२ ॥

ساری دات ترہ کامنا دایک لختی - کلا - بیہ مالا روپ
 دشمن پٹھ جے سُس ترئی للتا چھی و نان ترئی جیا ترئی ادما روپ

उद्धाम काम परमार्थ सरोज षण्ड -
 चण्ड द्युति द्युतिमुपासित षट् प्रकारम् ।
 मोह द्विद्वन्द्व कदनोद्यत बोध सिंह -
 लीलागुहां भगवतीं त्रिमुरां नमामि ॥ २३ ॥

یوسہ کامراجہ بیجا کھر پموش ڈلہ کے پھولنہ بابت سر یہ روپ روزانی
 مولادار پٹھ شٹھ چکر س منتر او پاسی روپ یوسہ تتی آسانی
 یوسہ موہ ہشت گالہ بابت گیانہ روپ سہہ گفنی چھی روزانی
 تمسی جگوتی ماما تر پرای سکن نکل گندھ تش چمپس پر نام کرانی

गणेश वटुक स्तुता रतिसहाय कामान्विता
 स्मरारिवर विष्टरा कुसुमबाण बाणै र्युता ।
 अर्पणं कुसुमादिभिः परिवृता च सिद्धैस्त्रिभिः
 कदम्बवन मध्यगा त्रिपुरसुन्दरी पानु नः ॥ २४

کنیش نہ بھیروں چھٹے توتا ترہ کر مچ
 شوناقد پانہ چھوئی آسن چو نہئی
 انگر کو سموبیہ ترسیو سدھوچہ و جج
 سوی روپ چون مانج ہی ترپور سندی
 رتی سان کامیو پیر سیوا کروں
 کامیو پوشہ بان سوداروں
 کدمبہ جنگلس منتر پیر روزانی
 کلیان بہ کرتسم تہ راچھ میانی

त्वामैन्दवीमिव कलामुनु भाल देश -
 मुद्गासिताम्बर तलामऽवलोकयन्तः ।
 सद्यो भवानि! सुधियः कवयो भवन्ति
 त्वा भावनाहित धियां कुल कामधेनुः ॥ २५॥

ہیم شکس منتر ترہ چندرہ کلا ہش
 ہی دیوی جلدی چھٹی تم بنان دانا
 چھک تم بن دیوان جی سادنی مطلبین
 وچھی چمکا دمتی آکاشہ سس
 بیہ بڈی کوتائی سس
 چانی باوان کے کن تم نرمل بوز سس

उत्तम हेम रुचिरे त्रिपुरे! युनीहि
 चैत श्विरन्तानमद्यौघ वनं लुनीहि ।
 कारागृहे निगड बन्धन पीडितस्य
 त्वत्संस्मृतौ भडिति मे निगडा स्त्रुटयन्ति ॥ २६॥

تاومت سون زن ترہ چمکان ترپرائی
 شدھ کر من بہ پایہ کھلمیانی لون

سمسار روپنی جیسلس منتر چھوس بہ کامنائی بیڑین ہند چھوم بہ بور
چانی سمرنی کن جلد جلد چھنن بہ بیڑی بلہ آسی عانس بہ اوگرہ چون

रुद्राणि ! विद्रुम मयीं प्रतिमामिव त्वा
ये चिन्तयन्त्युरुणकान्ति मूनन्य रूपाम् ।
तानेत्य पद्मल दृशः प्रसमं भजन्ते
कण्ठावसक्त मृदु बाहु लता स्तरुण्यः ॥ २० ॥

ہی رودرانی ایس پانئس ہر وپس وچھی رودر شکہ سرہ سندی پاٹھ جیکان
اپور وروپس پھیسئی دھیان کری سندر نظر و سہرہ اچھہ رچھہ جوان
زورہ سبت تمہ گردنی پچھا تھہ تراوی تراوی انداندی روز تھہ نس سیوا کران

त्वद्रूप मुल्लसित दाडिम पुष्परक्त -
मुद्गावये न्मदन दैवत मुक्षरं यः ।
तं रूपहीनमपि मन्मथ निर्विशेष -
मूलोकयन्त्युरु नितम्बभरा स्तरुण्यः ॥ २८ ॥

ایس چون دھیان کری دین پوشہ زنگہس اونا شہ کامراجہ بیجہ اکھر کس
یدوی روپ کن آسی سوی بد شکل اچھہ رچھہ وچھن زن کامدیو تس

त्वद्रूपैक निरूपण प्रणयिता बन्धो दृशो स्वद्रुण -
ग्रामोक्तर्णन रागिता श्रवणयो स्वत्संस्मृति श्रैतसि ।
त्वत्पादाचन चातुरी करयुगे त्वत्कीर्तनं वाचि मे
कुत्रापि त्वद्रुपासन व्यसनिता मे देवि मा शाम्यतु ॥ २९ ॥

ہی دیوی چنانہ در شک ابلاش ہر دمہ نترنی منتر بہ روز تن

ماتی گن بوزنک تمنامه آستن هر دمه روزتن میانن کنن
 ون نامہ سمن ترنس منز گری گری چانی یاد پوجا میانن آخن
 ون کیرتن کرونی روزتن مه وائی اوپا سنا چانی کم متہ مہ گتر هتن

ब्रह्मेन्द्र रुद्र हरि चन्द्र सहस्र राशि -
 स्कन्द द्विपानन हुताशन वन्दितायै ।
 वागीश्वरि ! त्रिभुवनेश्वरि ! विश्वमात -
 रून्त बैहि श्च कृत संस्थितये नमस्ते ॥ ३० ॥

سر سوتی تر پور سندی جگت ماتا بهونی شوری چھک آسوینه ثری
 بر بهار ودر اندر سر یہ چندر مه کمار ویشو گنیش پھوی پوجان ثری
 اندرہ نبرہ واتر ثرہ تر پھونس سارسی گل گنڈت میون پر نام وائی نه ثری

यः स्तोत्र मेतदनु वासर मौश्वरायाः
 श्रेयस्करं पठति वा यदि वा शृणोति ।
 तस्येप्सितं फलति राजभि री उच्यते, सौ
 जायेत स प्रियतमो हरिणेष्वाणानाम् ॥ ३१ ॥

تس ای چن آو تر پری پر تھد و ہر سار یا کنو بوزی آدہ بنیہ تس کلیان
 پکر ورت راجہ تس کرن پوجا ساری مطلب تس چھی نیران
 منج نامہ اسد تس چھی سبدان سدی چھو یو گنیش ہند زیادہ لوٹھ بنان

अथ घटस्तवः ॥

ॐ नमो महामायायै

देवि! त्र्यम्बकपतिपार्वति सति त्रैलोक्यमातः शिवे!
शर्वाणि ज्ञुपुरे मृडानि वरदे रुद्राणि कात्यायनि!
भीमे भैरवि चण्डि शर्वरि कले कालक्षये शूलिनि!
त्वत्पादप्रणतानुनन्यमनसः पर्याकुलान्याहि नः ॥ १७ ॥

थی دیوی چھک تہ ترمبک پتئی	ژی ومان ستی ژی یاروتی
تریلوکی ہمنسز ماما بھگو تی	ژی وریو دیوان ژی چھک سرڈانی
ژی ترپور سندری ژی رود رانی	ژی بھیانک روپ ژی شروری
ژی چنہ ٹی ژی ترشول دارانی	ژی کلی کالس ناش کرانی
آئے شرن تہ پادان ونئے کن گچی مٹھی	ویا کھٹائے شرناسہ بچھ ژی

उन्मत्ता इव सगृहा इव विषव्यासक्त मूर्च्छा इव
प्राप्त प्रौढमदा इवाति विरहग्रस्ता इवात्ता इव ।
ये ध्यायन्ति हि शैलराजतनयां धन्यास्त एकाग्रत-
स्त्यक्तोपाधि विवृद्ध रागमनसो ध्यायन्ति वामभुवः ॥ १८ ॥

پجرا تہ پراہ کس نہر کن مو پھت نشہ کس	ورین چہمت پجانی عارچہ کس
ہی ہمالہ پتری یم کرن چون دھیان	نیم آسونی چھی سٹھاد بھاو کس
اچھہ رچھہ ایک کہ بنٹھہ او پادتی رچھہ	راگہ سٹھہ دی اھیان گچی داران

देवि! त्वां सवृद्धदेव यः प्रणमति क्षोणीभूतस्तं नम-
 न्याज्जन्मस्फुरदङ्घ्रिः पीठं विलुठत्कोटीरं कोठिच्छ्रम-
 यस्त्वामुर्चयति सोर्चयते सुरगणैः यः स्तौति स स्तूयते
 यस्त्वां ध्यायति तं स्मरति विधुरा ध्यायन्ति सिद्धाङ्ग-

تسنی کھراوی پٹھانہ مکرہ دلوں	یُس پریش اگر لکھ کری ژرہ کن پرنام
تس پریش پوران دیوہ کھل	یُس پریش لو کہ کن کری چانی پوہ جا
دلوں تاتسنی استوتی سکران	یُس پریش کران اسی چانی توتا
سرگچہ اچھ رچھ تس جھی سمران	یُس پریش من کن کری چونی ہیان

ध्यायन्ति ये क्षणमपि त्रिपुरे! हृदि त्वां
 लावण्ययौवनधनैरपि विप्रयुक्ताः ।
 ते विस्फुरन्ति ललितायतनलोचनानां
 चिक्कमिति लिखितप्रतिमाः पुमांसः ॥ ४ ॥

من منس کسئی کھنہ ماترس	ہی ترپور سندری یس کری ہیان چون
بیمہ جوانی روس بیمہ نردھن	ید و سوا سہ سندرتائی روس
شکلہ کھن سوی دھیان سروں	اشہ سیدھی تس منجے لبہ پیٹھ

एतं किं नु दृशा पिवाम्युत विशाम्यस्याङ्गमङ्गैर्निजैः
 किं वाङ्मुनिगलाम्यनेन सहसा किं वैकल्यमाश्रये ।
 तस्येत्यथ विवशो विकल्पघटना कृतेन योषिर्जनः
 किं तद्यत्न करोति देवि! हृदये यस्य त्वमावर्तसे ॥

ایچہ اسندن استخوان
 اتھس پورس کاپریش نظری بیت

کیا سنا ننگل گزہ نا مس سیت کوئی کن پانس سیت رٹھن
 اچھ رچھ سندر گری گری تس کن بے روک پاٹھ آدین سپدن
 سنا رس منز کیا چھو در لہجہ تس ہر دس منز بس ترہ پانہ فیرن

विश्व व्यापिनि! अद्वैतेश्वर इति स्थाणावन्त्याश्रयः
 शब्दः शक्तिरिति त्रिलोकजननि! त्वय्येव तथ्यस्थितिः।
 इत्थं सत्यपि शङ्कुवन्ति यदिमाः श्रुत्वा रुजो बाधितुं
 त्वद्भक्तानुपि न क्षिणोषि च रुषा तद्विवि चित्रं महत् ॥

ایشرہ ناو جگتس منز وناں ہی جگت داینی پتھ شیوناخص
 شکستی مند ناو چھوی ترہ شویان تھے پاٹھ ناچ بھوانی تری جگتس منز
 کوئی کوئی دوکھ چھو دیوان بدوے ایشرہ جگتس سمارس منز
 چھکنہ بنین جگتس دوکھ ترہ ناوان ا پھر چھ ناچ چون کرو دھس پٹھ تی

इन्द्रो मध्यगता मृगाङ्कु सदृश च्छाया मनोहारिणी
 पाण्डुत्फुल सरोरुहासन गता स्निग्ध प्रदीपच्छविम्।
 वर्धन्ती समृतं भवन्ति भवती ध्यायन्ति ये दहिन-
 स्ते निर्मुक्त रुजो भवन्ति विपदः प्रज्ज्मन्ति तान्मूरतः

پھوتس پپوشس پٹھ تری چند مسش صفا چند مس کہ مس
 یوسہ کران وژن امرت کوی خوش ایونہ پرکاشہ کہ مس ترہ آسویہ
 اپد اچھی تمنی دور سپدان بیم بی دھیان کرن تم بیماری روس روزان

पूर्णन्दो; शकलै रिवति बहुलैः पीयूष भौरिव
 क्षीराब्धेः बहरो भौरिव सुधा पङ्क्तस्य पिण्डैरिव।

प्रालेयै रिव निर्मितं तव वपु ध्यायन्ति ये श्रद्धया
चितान्तर्निहितार्तिं ताप विपद स्ते सपदं बिभ्रति ॥ ८ ॥

پونم چندرہ زن امرت پراداہ زن
گچھ پنڈہ کبیرہ سدرچ لہر زن
شیشس ہبوصفا چون سروپ بناوت
یس کری دھیان تہ منہ لوکہ کن
تس چھی دگر گڑھان دوکھ غار پر ترہ اپدا
سمپداسو پراوان جنمہ جنمن

ये संस्मरन्ति तरलां सहसोऽक्षसन्तो
त्वां ग्रंथि पञ्चकभिदं तरुणार्क शोणाम् ।
रागार्णवे बहुलरागिणि मज्जयन्तीं
कृत्स्नं जगद् दधति चेतसि तान्मृगाद्वयः ॥ ९ ॥

یس سا دھاک کری دھیان چون باسوں
چنمل پرکاشہ سن سجلی سمان
پانترھ دل ژتھی بالہ سر یہ سندی پاٹھ
اوزلہ رنگہ مستی ژن ترہ چمکان
زنگہ سدس منتر فتمت ساروی
جگت زن رنگہ کن سرخی سان
یس ئی دھیان کری اس یوگنتی ہشت منتر
تسندوی کری کری دھیان چھی دھاران

लाक्षारस स्नपित पङ्कज तन्तुतन्वी -
मृन्तः स्मरत्यनुदिनं भवतीं भवानि ।
यस्तं स्मरतिमम, प्रतिम स्वरूपा
नेत्रोत्पलै मृगदृशो भृशम, चयन्ति ॥ १० ॥

لاچھی کیت رنگتہ پمپوشہ تارہیو
پر تھ دوہرہ یس داری چونئی دھیان
تس کامہ دیوزانت کہ یوگنتی
نتر روپہ پوشوہ چھی پوجا کران

स्तुमस्त्वा वाच्यमुच्यता हिम कुन्देन्दु रोचिषम्
कदम्बमाला विभ्राणामा, पादतल लम्बिनीम् ॥ २१ ॥

توتا کران چھی اسی ژہ ہی واکھ یوی
چندرس کوندہ پوشش یوسہ چھی دھیمان
شوبھونی کڈبہ چھک ماجی ژہ دارونی
نال چھئے ژہ شیرہ پٹھ پادن تان

सूक्ष्मीन्दोः सितपङ्कजासनगतां प्रलियपांडु त्विषं
वर्षन्ती ममृतं सरोरुहभुवो वक्त्रेपि रन्ध्रेपि च।
अच्छिन्ना च मनोहरा च ललिता चाति प्रसन्नापि च
त्वामेव स्मरतां स्मरारिदधिते! वाक्सर्वतो वल्गाति ॥

کلس پٹھ چندرس شوبلون ژہ درامت
پموشش پٹھ ژہ دفتی سس
بہتھ چھک ژہ شوبلونی برہمہندرس منر
امرت چھٹان بڈی شوبھای سس
یس بی دھیان کری چون ہی دیوی تس
سرسوتی نیرہ مکھ بڈی وکاسہ سس

ददातीष्ठा भोगान् रूपयति रिपून् हन्ति विपदो -
दहत्याधून् व्याधीन् शमयति सुखानि प्रतनुते।
हतादन्तरदुःखं दलयति पिनष्टीष्ट - विरहं
सकृद् ध्याता देवो किमिव निरवद्यं न कुरुते ॥ २२ ॥

مطلب چھک یوان دشمن ژہ گالان
آیدین چھک ژہ ناش کران
آدین جالان وپادین شمر اوان
شکھتہ سمپدا چھک ژہ ویستاران
اندردم دکھتہ داد پیریم وره چو گالان
یم کی لٹی ماجی دھیان چون کران
یم اده کہ نہ پایہ شہ چھی موکلان

त्यन्वेति प्रतिपद्यते कलयति स्तौत्याश्रयत्यर्चति ।
 यश्च त्र्यम्बकवल्लभे तव गुणानुकरण्यत्यादरा -
 तस्य श्रीर्न गृहादप्येति विजयस्तस्याग्रतो धावति ॥ १४ ॥

دیا گئے کن حاجی ایس ٹرہ پرادی	ایس چون کری سمرن بوز سیت پس زانی
لولہ تیر سیت کری درشن	شدھ منہ کن چہ ناو چون گری گری
ہر وقتہ تو تائی کری چانی بیہ پو جا	شرودہ کن من کن ایس و چاری
تمہ روستوی ایس نہ روزی اکھ ساعت	گن گیوی چانی لولہ سان دن تہ رات
جئے ایس پر تھ وقتہ بروٹھ چھو دوران	لخمی چھنہ تندی گھری نشہ نیران

किं किं दुःखं दनुजदलिनि! क्षीयते न स्मृताया
 का का कीर्तिः कुलकमलिनि! व्याप्यते न स्मृतायाम् ।
 का का सिद्धिः सुरवरनुते! प्राप्यते नार्चिताया
 कं कं योगं त्वयि न चिनुते चित्तमूलाम्बितायाम् ॥ १५ ॥

ایم کلنی نہ چانے سمرنی سیت	کستا دوکھ چھی تم ہی راکھسن کالونی
یوسہ نہ بنی چانے تو تائے سیت	کوسہ چھی نیکنامی ہی کلس کھارونی
یوسہ نہ پرافت سپدی چانی پوجائے سیت	کوسہ کوسہ چھی سدھی ہی سدھی داتری
ایم نہ سدھ بن چانی چنن سیت	کم کم چھی تم لوگ ہی جگت امبا

ये देवि! दुर्धरकृतान्त मुखान्तरस्थाः
 ये कालि! कालघनपाश नितान्त बद्धाः ।
 ये चाण्डे! चण्डगुरु कल्मष सिन्धु मग्ना -
 स्तान्पासि मोचयसि तारयसि स्मृतैव ॥ १६ ॥

موکھس منز باگ گیمت
 زری چر پاتھ چھی کھنڈنہ آمرت
 پاپکس سمندر کس منز چھ فطمت
 تن موکھاوان بیه تاران پھئی

ہی دیوی یم ہا کالہ سندھی کھنڈنہ
 ہی کالی یم ہا کالہ سنری موچی
 ہی چندی یم باریک تہ کھنڈنہ
 یہ کرن دھیان چون تلہ چھک رچھان

लक्ष्मी वशीकरण चूर्ण सहोदराणि
 त्वत्पाद पङ्कज रजांसि चिरं जयन्ति ।
 यानि प्रणाम मिलितानि नृणां ललाटे
 लुम्पन्ति देव लिखितानि दुरङ्गराणि ॥ १० ॥

یادچہ گرد چانی چھی طاقتہ سس
 یادچہ گرد چانی بدی نشانہ سس
 جگتس منز بنی سوئے کار سس
 موج بوانی نچی دش کرنس پٹھ
 چانی پرنامہ وزی لگہ یمن للاٹس
 سوی پاوچ گرد گالی دُر اکھترس

रे मूढाः किमयं ब्रूथैव तपसा कायः परिकल्पयते
 यज्ञैर्वा बहुदक्षिणैः किमितरे रिक्ती क्रियन्ते गृहाः ।
 भक्तिश्चेदविनाशितो भगवतो पादद्वयो सेव्यता-
 मुनिद्राम्बुरुहातपत्र सुभगा लक्ष्मी पुरो धावति ॥ ११ ॥

پننس شریکس تکلیف دیوان
 کیا زہ چھک گرہ پنن خالی کران
 ہدہ کردن تسندوی یاد سیون
 لخمی چہ بروٹھ بروٹھ چھی دورن
 ہی موٹھ کیا زہ چھکے فائدہ تپ کن
 یکنہ کن دان کن بڑی دکھائی رکن
 گشہ شرن ماجہ شارکائی پراوچہ بھکتی
 ادہ پھولتہ پمپوشہ نتر و سس

याचे न कंचन न कंचन वञ्चयामि
 सेवे न कंचन निरस्तसमस्त दैन्यः ।
 श्लक्ष्णं वसे मधुरमुद्दि भजे वरस्त्री
 देवि ! हृदि स्फुरति मे कुलकामधेनुः ॥१६॥

مانسی منگہ نہ بیکینی تارہ نہ بازی
 عاریہ تر اوہ کر نہ کینسی سیوا
 راول دستر دارہ کھمہ مودری چیز
 اچھہ رچھہ نی سیت کرہ کھیلا
 بلہ ماج بوانی ہر دین منزمہ روزک
 تلہ میانی کامنہ سیدھ سپدن

शब्दब्रह्ममयि ! स्वच्छे ! देवि ! त्रिपुर सुन्दरि !
 यथाशक्ति जपं पूजां गृहाण परमेश्वरि ! ॥२॥

ہی شبد روپی نرمل سروپی
 ہی دیوی ہی تر پور سندی
 کہہ تیھا شکھتی مہ چانی پوجا
 کر سو یکارہ ہی پر میشوری

नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषकाः
 व्यवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः सदा ॥ २१ ॥

روزتن سکھی ماج سادھک ساری
 یم دوشٹھ آسن تم گلتن
 بشور وپ او ستھامتہ ماج بنتن
 گورہ دیورہ رامہ پٹھہ پسن روزتن

दर्शनात्पापशमनी जयान्मृत्युविनाशिनी ।
 पूजिता दुःखदौर्भाग्यहरा त्रिपुरसुन्दरी ॥ २२ ॥

چانی جہہ مرتو چھو ناش سپدان
 چھوس دوکھ دُر باگیہ دور چھس گڑھان
 جانی درشنہ پاپ ساری چھی گلان
 چھو جے کن چون مہا گیونہ کن

नमामि यामिनीनाथ लेखालङ्कृत-कुन्तलाम् ।
भवानौ भवसन्तापनिर्वापण-सुधा-नदीम् ॥ २३ ॥

چند درمہ پر ز لان راترو و دن
نمسا کا چھوس کران بکیش منتر چہ
امرت ندی ہندی پر وادہ سیت زک
سمار دو کھن چھک نواران (ثرئی)

मंत्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्गतम् ।
त्वया तत्काम्यतां देवि! कृपया परमेश्वरि ॥ २४ ॥

دودھی ہین آست ئی کینجاہ پر ووم
منتر ہین آست کریاہین آست
ثرئی کریاہے کن عاتس مہ ناچ بخشیم
تتھ سارسی ہی پر میشوری

—:—:—

(8)
3. 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

3. 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

Rangh Patel

(3)
3. 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

4
3. 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

अथ अम्बस्तव : ॥

ॐ नमो जगदम्बिकायै ।

—:०:—

यामाऽमनन्ति मुनयः प्रकृतिं पुराणीं
विद्येति यांश्रुतिरहस्यविदो वदन्ति ।
तामर्धं पल्लवितशंकर-रूप - मुद्रां
देवीमनन्य शरणः शरणं प्रपद्ये ॥ १॥

لیس دنان و دیا ویدر هسه زانه وئی
شوبهائی سس جگتس چھر رچھوئی
چھوس پیوان تس پادان پٹھ پرن
لیس مینیشر آد پر کرتی مانان
تس شیونا تھ سنر اردانگی یوسه
تس آمرت به ایگا کر چت بنٹ

अम्ब! स्तवेषु तव तावदुक्तनृकाणि -
कुण्ठी भवन्ति वचसामपि गुम्फनानि ।
डिम्भस्य मे स्तुतिरुसावसुमञ्जसापि -
वात्सल्य निघ्न हृदया भवती धिनोति ॥ २॥

برہما وائی تی جڈھ بنائی
بوانا گئے کن ہر یس تہ سکھ دیوانی
ہی مانا جانی تو تا کر نس پٹھ
مہ تر سنری تو تا بد چھی ٹوٹ پھوٹئی

व्योमेति बिन्दुरिति नाद इतीन्दुलेखा
रूपेति वाग्भवतनूरिति मातृकेति ।

निष्पन्दमान सुखबोध सुधा स्वरूपा
विद्योतसे मनसि भाग्यवता जनानाम् ॥३॥

چند ریمہ کلاہش چھک ترہ پیر لال
شکھ نہ گیان امرت ترہ نشہ نیرال
جگتس منز آسہ یوس بہا گوان
چمکان چھک تس منز ملش ترہ پلنٹے

आविर्भावत्पुलक संततिभिः शरीरै-
निष्पन्दमान सलिलै नयनैश्च नित्यम् ।
वाग्भिश्च गद्गद-पदाभिरुपासते ये
पादौ तवाम्ब ! भुवनेषु त एव धन्याः ॥४॥

اوشہ آسہ نتر و نیران
پادن ترہ آسہ یوس پوجا کران
نرن بونن منز سوی چھو بہا گوان
آسن یس روم او تھ دینہ شریس
وانی کن پد پیری گت گچھ گچھ
تس ہیو کوس سنا چھو تر بلوکی منز

वक्त्रं यदुद्यतमभिष्टुतये भवत्या-
स्तुभ्यं नमो यदपि देवि ! शिरः करोति ।
चेतश्च यत्त्वयि परायणमुम्ब ! तानि
कस्यापि कैरपि भवन्ति तपोविशेषैः ॥५॥

ہی ماج چانی توتا کر نس پھٹ
ژی کن نمسکار کر نس پھٹ
سمرن کری چون راترو دن
پونہ کن روزی گری گری چئی شرن
مکھ یس آسی او دلوگر مس
شیر آسندوی آسہ گری گری ہی موج
من یس گمت آسہ موج ژئی کن
آسی کانہہ سوبہا گوان کتا نیفاض تپ کے

मूलालवाल कुहरादुदित भवानि !
 निर्भिद्य षट् सरसिजानि तडिल्लतेव ।
 भूयोऽपि तत्र विशसि ध्रुवमण्डलेन्दु -
 निःष्यन्दमान परमाभूत तौय रूपा ॥ ६ ॥

مولادار شه در انج تهر شه پيموش چلته بجلی هندی پاٹھی هير کن کھسان
 سهر دلسی منز اثرت توره نيران ابرت دانی روپه بن چھی واتان

दग्धं यदा मदनमेकमनेकधा ते
 मुग्धाः कटाक्ष विधिरङ्कुरयां चकार ।
 धत्ते तदा प्रभृति देवि ! ललाट नेत्रं
 सत्यं ह्रियेव मुकुलीकृतमिन्दुमौलिः ॥ ७ ॥

یله زول کا مدیو اکھ شیو نا تھن
 تنه پٹھ مہادیو منز لالاٹک نتر
 اکھ کٹا کھی تنه کیت اویدا وتھ
 شرم کن او دوی نتر چھو موڑ راوتھ

अज्ञात संभव मनाकलिता न्ववायं
 भिक्षुं कपालिनमुवास समुद्वितीयम् ।
 पूर्वं करग्रहण मङ्गलतो भवत्याः
 शम्भुं क एव बुबुधे गिरिराजकन्ये ! ॥ ८ ॥

نه چا نمتهی جنم سس کوله سس بھکیو
 چانی دواہ بر وٹھ ہی ہمالہ پتری
 ننگے تہ دوہی روس ترھنت کلہ مال
 سس اوس زانان شیو سدر حال

चर्माम्बरं च शवभस्म विलेपनं च
 भिक्षाटनं च नटनं च परेत भूमौ ।
 वैताल संहति-परिग्रहता च शम्भोः
 शोभां विभर्ति गिरिजे! तव साहचर्यात् ॥ ६ ॥

پریم پوشاک شمشان بھسا ملت نثران شمشان سو بھیک منگہ وں
 بھوتہ بھل پروار آسون تس شیوس شوبان تلہ یلہ ترہ سیت چھو پکوں

कल्पोपसंहर्ण केलिषु पण्डितानि
 चण्डानि खण्डपरशोरूपि ताण्डवानि ।
 ज्वालोकनेन तव कोमलितानि मातः!
 लास्यात्मना परिणमन्ति जगद्विभूत्यै ॥ १० ॥

کلیاتنگ ناش نچوناته گندونا تس مہادیو سنتر چھی بد کریڈا
 ساروی سو بد لان سپید این منر نیلہ تراوان تتھ ترہ شو بھ نظر ا

जन्तोरुपश्चिमतनोः सति कर्मसाग्रे
 निःशेष पाश पठल च्छिदुरा निमेषात् ।
 कल्याणि! दैशिक कटाक्ष समाश्रयेण
 कारुण्यतो भवसि शाम्भव वेद दीक्षा ॥ ११ ॥

جیوس کر من سبد تتھ شدھی اکہ نمیشہ پھانسی سموتھیں ترہ گالان
 ژئی چھک دیبای کن گورہ روپ بنه شوش کھتی دیکھیا اپدیش ژئی کران

मुक्ता विभूषणवती नव विद्रुमाभा -

यच्चेतसि स्फुरसि तारकितेव सन्ध्या ।

एकः स एव भुवन त्रय सुन्दरीणां

कन्दर्पतां व्रजति पञ्चशरीं विनापि ॥ ११

آسمینہ چھک تہ موج شو بہا یمان
چون سروپ یتھ ہیونت باسان
پانچہ کان روس تی کا مدیوہ سمران

نہ مالہ زیور رودرہ مالہ چھن چھن
پوشش آسہ سندھیہ تارکوس
پوشش تری بھونچہ یو گئی

ये भावयन्त्यमृतवाहिभि रंशुजालै -

राप्त्यायमान भुवनाममृतेश्वरी त्वाम् ।

ते लङ्घयन्ति ननु मातरलङ्घनीयां

ब्रह्मादिभिः सुरवरैरपि कालकक्षाम् ॥ १२

امترہ رویہ سکھ دیوان ترن بھون
یتھ ترن کھن برہما دکن تہ دیون

ی ماما یم تہ سروی آسن
نم تران کالہ مر یا دیابے ایلور

यः स्फाटिकाश्च गुण पुस्तक कुण्डिकाढ्या

व्याख्या समुद्यत करा शरदिन्दु शुभ्राम् ।

पद्मासनां च हृदये भवती मुपास्ते

मातः! स विश्व कवितार्किक चक्रवर्ती ॥ १३

پوستک کمندل بیہ دون اتھن
چندر مس ہیو پیوش زن چہ آسن
کوبن ہند چکر ورت بنان سو جگش

سٹیک چپ مال اکہ اتھ دارتھ تہ
ویا کھیا نس پٹھ بیا کھ اتھ چہو لگرت
یس یتھ دھیان کری چون موج منتر مش

बर्हीवतंसयुत बर्बर केशपाशा
गुञ्जावली कृतघनस्तनहार शोभाम् ।
श्यामा प्रवालवदना सुकुमार हस्ता
त्वामेव नोमि शवरीं शवरस्य जायाम् ॥ २३ ॥

مورچہ مکہ سُس ژہ چکونی کیشہ سُس
ژہ فلی ہار سُس ژہ شو بھی ایمان
چکونی مکہ سُس تہ کوئل اتھو سُس ژہ
تھہ شکار بانی روپس بہ پر نام کران

अर्धेन किं नवलता ललितेन मुग्धे !
क्रीतं विभोः परुषधैर्मिदं त्वयेति ।
ग्यालीजनस्य परिहासं वचांसि मन्ये
मन्दस्मितेन तव देवि जडो भवन्ति ॥ २४ ॥

ہی جہا سندی پھک ژئی آسونیہ
کیا زئی ایتھن مولہ پتھہ ہیو سوامی
وین ہند اتھہ ہاسی پوروک وچن
منوہرتہ سندر نہ تہر جن
پس سخت بیہ کٹھور شیو جھو آسون
چانی کم اسہ سیت مورچہ چھی تم بنن

ब्रह्माण्डं बुद्धुद कदम्बक संकुलोयं
मायोदधि - विविध दुःख तरङ्गमालः ।
आश्चर्यं मम्ब भठिति प्रलयं प्रयाति
त्वद् ध्यान संतति महावड्वा सुखायै ॥ २५ ॥

بہمانڈ بھر کھل بھرت ئی مایا سدر
آش چر جھو ہی موج ناشس جھو واتان
دکھ لہر وسیت برتھہ آسون
چون دھیان اتھہ کوئل جھو داڑوا اگن

दाक्षायणीति कुठिलेति गुहारणीति -

कात्यायनीति कमलेति कलावतीति ।
 एका सती भगवती परमार्थतोऽपि
 सृष्ट्यस्य बहुविधा ननु त्वकीव ॥ १८ ॥

بر تھ گفای منز چھک تره روزانی
 چو کر کا اوتی تر تری بھگوئی
 لب نہ چھک ایوان بہرہ روپہ پختانی

کھ پتری تری مولا دار داسنی
 تیا پنی تری تری تری تری تری
 بھک کوئی آست ہی موج بھوئی

आनन्द लक्षणमनाहत नानि देशे
 नादात्मना परिणतं तव ह्यमीशे ।
 प्रत्यङ्मुखेन मनसा परिचोय मानं
 शसन्ति नेत्र सलिलैः पुलकैश्च धन्याः ॥ १९ ॥

ناد روپہ بنی پس چو نی دھیان
 اشہ سس کری دھیان تری بہا گوان

آخند روپی ہر تھ چکر س منز
 اچیا س کن انتر تھ منہ کن

त्वं चन्द्रिका शशिनि तिमिरहृत्ते रुनिमन्त्रं
 त्वं चैतनासि पुरुषे पवने बलं त्वम
 त्वं स्वादुतासि सलिले शिखिनि त्वमूषमा
 निःसारं मेव निखिलं त्वद्वते यदि स्यात् ॥ २० ॥

تری میریس دنی آسان
 تری پیرہ رانر بل پان
 تری روس جگت لشہ سار چھو روزان

تری چھک موج لانی چندیس روشنی
 تری چھک چیتن پورش س آسمان
 تری سیاد پانس اگس شہتی

ज्योतीषि यद्विचि चरन्ति यन्तरिक्षं

सूते पयांसि यदुहि धरणीं च धत्ते ।
 यद्वाति वायु रनली यदुदचि रास्ते
 तत्सर्वं मुम्ब ! तव केवलं माझयैव ॥२१॥

ہی ماما میریہ جیندرہ تارک
 شیشہ ناگ لیس نعل پر تھوی داران
 والو فیران اگن چھو زوتان
 اکاشس پٹھیم پرکاش دیوان
 میگ یم رُودر جگکش تراوان
 تم ساری چانی حکمہ بیت چلان

सङ्कोच मिच्छसि यदा गिरिजे तदानीं
 वाक् तर्कयो स्त्वप्राप्ते भूमि, रनाम रूपा ।
 यदा विकास भुषयाति यदा तदानीं
 त्वन्नाम रूप गणनाः सुकरी भवन्ति ॥२२॥

سنکوچم یزہا یلہ چھئے ترہ سپدان
 یلہ وکاشس دیوان چھک ترہ ہی گرجی
 تکرہ ترہ موج من ترہ بدھ نروکار بنان
 تکرہ چانی نام روپ نن چھہ نیران

भोगाय देवि भवतीं कृतिनः प्रणम्य
 भू किंकरी कुल सरोज गुहाः सहस्राः ।
 चिन्तामणि-प्रचयकल्पित-केलि शैले
 कल्पद्रुमोपवन एव चिरं रमन्ते ॥२३॥

ہی دیوی سکھ بایت بہا گوان
 تکرہ چانی بمبہ خرچ متن بلخی ترہ
 چننا منی رنگ سموہ بنا و متنس
 کلہہ در کہ سستیو بر متن باغن
 یلہ ترہی چھئی تم پر نام کران
 ساسہ بڑہ ایشورای چھی روزان
 کھیلی ہندس پہاڑس پٹھ تم کھیلان
 منر تم بچ کال چھئی فیرانی

हन्तुं त्वमेव भवसि त्वदधीन मीशे ।
 संसार तापः खिलं दयया पशूनाम् ।

वैकल्यनी किरण संहतिरेव शक्ता
धर्म निजं शमयितुं निजयैव ब्रूष्या ॥२४॥

پچھس ژړی ناش کړان دیلے کړن
دوکه نورتي چھي ژړی آدین
شمردان پښی دوشنه کړن
هی ماچ جیوس سمسار دوکه ساری
دوکن هتد ناش ژه ماتحت چھو آسون
یتھ پاٹ سر یه چھوی پښی گرمی

शक्तिः शरीरमुद्यि देवत मन्तरालया
ज्ञानं क्रिया करणमानस जालमिच्छा ।
ऐश्वर्यमायतनमावरणानि च त्वं
किं तन्न यद्ववसि देवि ! शशाङ्कमौले ! ॥२५॥

دواٹ سروپ چھک آسونی ژړی
اندر یه شکھتی آسونی شکھتی ژړی
گر هیدین هنر جالے آسونی ژړی
سوی سروپ چھک پری پورن ژړی
شر یه چه آسونی شکھتی ژړه آسونی
چھو آتما دهیان شکھتی کرباش شکھتی
یترها شکھتی ایشوری پر یوار ژړی
کیانه چھک ژره آسونی لیس سروپ غوسند

भूमौ निवृत्तिरुदिता ययसि प्रतिष्ठा
विद्यानले मरुतिशान्तरत्नोत्त शान्तिः ।
न्योमनीति याः किलकलाः कलयन्ति विश्वं
तासां विदूरतरं मुम्ब ! पदं त्वदीयम् ॥२६॥

جلس منر یهتھٹا کلا روپ ژړی
پونس منر شانتی کلا ژړی
تمونشہ دور چون سروپ آسون
تمونشہ مود دور روزان ژړی
پر تھوی منر نورتي کلا روپ ژړی
آگنس منر ودیا کلا ژره آسونیہ
آکاشس بیمہ کلا عکلس داران
تمو کلا بونشہ دور چون سروپ

यावत्पदं पदसरोजयुगं त्वदीयं
 नाङ्गी करोति हृदयेषु जगच्छरण्ये ! ।
 तावत् विकल्प जटिलाः कुटिल प्रकारा-
 स्तर्कग्रहाः समयिना प्रलयं न यान्ति ॥२०॥

میت تمام نہ یاد بوری چانی رشن ہر دیس
 ہر جگت رچھونی تہ تانیہ تم شک رتھی
 وادی کرونی اُلہ سیدی
 موڑھ بہاؤ تہند ناش کتی

यद् देवयानं पितृयानविहारं मेके
 कृत्वा मनः करणमङ्गलं सार्वभौमम् ।
 याने निवेश्य तव कारणं पञ्चकस्य
 पर्वणि पार्वति ! नयन्ति निजामनत्वम् ॥२८॥

یم یوگی پرشس پرانا پانہ یوگ
 اندر یہ کھل تہ من اسک رینمیت
 ابھیاس کر کر یلہ پراون
 تم سواری کران پانرن کارن

स्थलासु मूर्तिषु महीप्रमुखासु मूर्तेः
 कस्याश्चनापि तव वैभवमूख ! यस्याः ।
 पत्न्या गिरामुपि न शक्यत एव वक्तुं
 तासि स्तुता किल मयेति तितिक्षितव्यम् ॥२६॥

یہ تھولہ موڑئی موج چھی آسان
 چانی ہشس و بھوتی چھنہ بانہ ان
 کن چانی گیوتھ چھنہ تم تی کینہ ہرکان
 معافی دیم مہ چھوس بہاؤ دان
 پر تھوی تہ پٹھ بابا تسس تام
 کوئی موڑتی منرن ہی موج بوانی
 برہما دکن تی چھونہ تھہ ہیو سامر تھہ
 منے و بھوتی ہند کن کر مہ گاین

कालाग्नि कौटिरुचिमन्त्र षडध्वशुद्धा -
 बालावनेषु भवतीं ममृतौघ वृष्टिम् ।
 श्रयामा घनस्तन तदा सकली कृतौ च
 ध्यायन्त एव जगतां गुरवो भवन्ति ॥३०॥

کلیانته اگنه پاٹھ گہس ہس ہی موج
 ساروی بیہ قایم کر نس پیٹھ
 سمسار ناشس پٹھ ترہ چمرکان
 چھک ترہ تلمہ امرنگ وشن کران
 تم موج جگتک گورو چھی سپدان
 ریم شامہ روپ سندر چان دھیان چھی داران

विद्या परा कतिचिद् म्बर मन्त्र! केचि-
 दास्यन्ते मेव कातेचि त्काते चिञ्च मायाम् ।
 त्वां विश्वमाहु रुपरे वय मामनाम
 साक्षात्पार करुणा गुरुमूर्ति मेव ॥३१॥

کینہہ چھی تہنر و دیا کینہہ چھی آنند
 کینہہ جگت ماتا ساکھیات حدہ روس
 کینہہ چھی مایا روپ ترہ مانان
 دیا سر وپ گورو روپہ اسی ترہ زانان

कुवलय दल नील बबेर-स्निग्ध केश
 युथुतर कुच भागु-जाल कान्तावलग्नम् ।
 किमिह बहुभिरुक्तै-स्त्वत्स्वरूप पर नः
 सकल भुवन मातः सन्ततं सन्निधत्ताम् ॥३२॥

کولہہ برگیہ پاٹھ چھک مارچ ترہ چمکونی
 سندر کمر سس سینہ لون تراوتھ
 دارمست ترہ ہی موج سندر کیش
 ہی موج آسونی ترہ جگتچ ایش
 سندر کمرہ روت نم ت دم تیوٹھ سندیش
 جگتچ ہی زیادہ دتھی کیا نیری حاصل

—***—

अज्ञानन्तो यान्ति ह्ययमवश्यमन्योन्य कलहे -
 रमी मायाग्रन्थौ तत्र परिबुद्धन्तः समयिनः।
 जगन्मात जन्म ज्वर भय तमः कौमुदि। वयं
 नमस्ते कुर्वाणाः शरणमुपगमो भगवतीम् ॥१॥

۱۰۱ اوش پاٹھ ناشه بهادوس چھئی وانان گنڈ نئی پھتھ دولہ دولہ گزھان چھئے کہ تمہ کوئی چنبد ریزہ بارسان گل گنڈ تھ اس ژہ کن پزنام چھی کران	۱۰۲ نه زاد ون مورکھ پانہ وینہ رلڑ لڑ یکنے منته وادی مایائی ہند نئی ہی جگت مانا اسی جنمکے جو آمرت شران چھی سنمکھ ہی موج
--	--

वचस्तर्कागम्य स्वरस परमानन्द विभव -
 प्रबोधाकाराय द्युतिलुलित नीलोत्पल रुचे ।
 शिवस्याराध्याय स्तनभर विनम्राय सततं
 नमो यस्यै कश्चै चन भवतु गुग्धाय महसे ॥२॥

۱۰۳ چھک ژہ چیتن سر دیپ بریمہ آسند ژئی شو بهایمان بیه کیان ته آسند گیانه کر یا رویه تنه باری رکن سارنی موہن اندر انان ژہ ہی رکن	۱۰۴ وانی کن دیکار کن چھک ژہ موج نه پیرا وئی پتلی اوتھ بلہ پوشه دیتی س شو س چھک آرادینی جگتس برھادوان نمسکار آسنے تھ کھتاینہ تیز س
--	---

लुठद् गुब्जाहार स्तनभर नमन्मध्य - लतिका
 मुदब्दुमोमः कण गुणित नीलोत्पल रुचम् ।
 शिव पार्थ त्राण प्रण - मुगया कार - गुणित
 शिवा मुन्तग् यान्तीं शवर मुहमन्वैमि शवरोम् ॥३॥

۱۰۵ زاول کمر یس ژہ موج شو بهان پتلی اوتھ بلہ پوشه رنگه چکیان داریمت تشکاری رویس ژہ آسون گل گنڈ تھ ژئی آمرت چھو سے شران	۱۰۶ ریچ فل لڑ ژہ نالی تنه باری نمتهئی پھٹمته گومہ بیت گمہ فر ژہ شولونی ار جنس لیچھنے تس شیوس پته پته تھ تشکاری بهائی روپس ہی موج بوانی
--	--

मिथः केशकेशि प्रधाननिधनस्तर्कै चरन्ता
 बहुश्रद्धा भक्ति प्रणय विषयाश्चाप - विषयः ।
 प्रसीद प्रत्यक्षी भव गिरिमुते । देहि शरणं

لہ لڑتین پتہ ناش چھو سپدان
شردهائی کن چانی پوڑا کران
سنتو شھ بن اسہ روز بچاوان
تھب کر اسہ موج نترجھی دولہ گزھان
شونا وا بھہ وا

تہ کر دن چھی مس کڈان اکھ اس
ٹھاہ پُرش بھکتی کن تہ پریمہ کن
ماج پرکٹ بن اسہ پٹھ پر سن بن
سہ چھی چھل منہ مس تھہ روستی
تہ یادھان

कदा केन केति क्वचिदपि न कश्चित्कलयति ।
अमुष्मिन्निश्वासं विजहिहि ममाह्वाय वपुषि
अपद्यथा श्वेतः सकलजननीमेव शरणम् ।

چھوی غوراک نی انگل یانکھی کھیوان
پنی پتھر شریہ کر کاہنہ نہ زانان
شریرج ممتا جلد تہ تراوان

ہی منہ پتھر شریہ س پٹھ نہ اعتبار
نہ وقتہ کتھ جایہ کتھ پاٹھ کہ طریقہ
بیانی من گزھ شرن جگتھ ماجہ کن

अनाद्यन्ता भेद प्रणयरसिकापि प्रणयिनी
शिवस्यासौ येत्त्वं मरणेष विधौ देवि गृहिणी
सवित्री भूताना मपि यदुदभूः शैलतनया
तदेतत्संसार प्रणयन महा नाटकं सुखम् ॥ ६

آستھتی چھک شیوسنر پریمہ روپ
آس ہادیوسنر گراھنی روپ
سمار لیلچھی چون جھنہ روپ

آدانت روس بیہید روس پریمہ روپ
وواہ ودھی کن ہی دیوی بھک
ہی ہمالہ تیری جیون کران تہ پیدہ

ब्रुवन्त्येके तत्त्वं भगवति सदस्ये विदुरसत्
परे मातः । प्राहु स्तव सदस्ये सु कवयः
परे नैतत्सर्वे समभिदधते देवि सुधिय-
तदेतत्त्वन्माया-विलासितं मशेषं ननु शिवे !

کنہہ چھی ونان ست کنہہ است روپ
کنہہ وانا ونان ست است روپ
کنہہ ونان بہ ساروی پھوچون پھولہ روپ

ہی دیوی کنہہ چھی ونان تہ تو روپ
کنہہ چھی ونان تہد کھوتہ تہدی موج
کنہہ چھی ونان انرواچہ تہ اسون

तडित्कोटि ज्योतिर्द्युति दलित षड् ग्रन्थि मदन
प्रविष्टं स्वाधारं पुनरपि सुधावृष्टिं वपुषा
किमुप्याष्टात्रिंशत्किरणं सकली भूत-मनिशं
भजे धाम श्याम कंच भगवत बर्बर कचम् ॥ ७

کھنشن گنڈن ژر تھجھک اژان
 امرت درشن سرورپ کرن دسان
 تنہ باری منجھ کیش ژرہ چمکان
 گری گری روزہ نابو سیوا کران

کروہ اوز ملہ سمان چانی ونٹی
 سوآ وار چکرس بیه توره نیران
 38 کلا روپ جگت وکسا دتھ
 تھ شامہ روپس ہی موج بوانی

चतुष्पत्रान्तः षडदल भग पुठान्त स्त्रिवलय -
 स्फुरद् विद्युद्वह्नि द्युमणि नियता भक्षुतेयुते ।
 षडश्रं भित्त्वादौ दशदल मूथ द्वादश दल
 कलाश्रं च द्वाश्रं गतवति नमस्ते गिरिसुते ॥६॥

تر کونس منز سا طه تری وار سر پا کار
 شکھنی گنڈ کنی تھتی ژرہ چمکان
 پتہ شوڈشہ دلہ پٹھ چھی نیران
 ہی گرجی چھس تھ سرورپس نکسا کران

چوتش دلہ کلمہ منز نیر تھ شھ دلس
 اوز ملہ چمک زن ساسہ بد سر یہ زن
 شھ دلہ ژر تھ دوشہ دلہ پتر دوا دتھ دل
 دودلہ منزہ درا چہ تس کند لکنی

कुलं केचिच्चाहु-वैपुरुकुलं मुन्ये तव बुधाः
 पर तत्संभेदं समभिदधते कौलमुपरे ।
 चतुर्णां मध्येषां मुपरि किमुपि प्राहुरपरे
 महामाये ! तत्त्वं तव कथं मुमी निश्चिनुमहे ॥१०॥

کینہہ گیانی ونان ژرہ پیرہ شیوروپ
 کینہہ ونان امرکو تھ چھو چون روپ
 ہی ہما مائی کتھ پاٹھ زشیچے
 بنہ اسہ کوسنا چھو چون موج سروپ

کینہہ گیانی ونان چہ ۳۶ تھو روپ
 کینہہ ونان چھی ژرہ موج شیو شکھتی روپ
 کینہہ ونان تھہ کہوتہ تھ کورستانیروپ
 بنہ اسہ کوسنا چھو چون موج سروپ

षडध्वारण्यानीं प्रलय रविकोटि प्रतिरुचा
 रुचा भस्मीकृत्य स्वपद कमल प्रहृ शिरसाम् ।
 वितन्वानः शैवं किमुपि वयु रिन्दौवर रुचिः
 कुचाभ्यामानम्रः शिव पुरुषकारो विजयते ॥११॥

کہور دفتی سس ژرہ پیرلاان
 پٹھ تھوان مستک چمک تمن رچھان
 گیان کریا تنہ باری نمتھ ژرہ شوہھان

شہ وتی سس جنگل پر اسے کاس پٹھ
 پننن بھکتن بجم چانن چورن
 شیو منز کورستانیروپ ژرہ دفتی سس

شیو سندر پور شرکار چھک مہج تہ آسونیہ تہ شکتی روپس تری نمساو کران

प्रियङ्गु श्यामाङ्गी सुरग तरवासः किसलय
समुन्मीलान्मुक्ताफल बहुल नेपथ्य दुःसुमाम् ।
स्तनद्वन्द्वस्फारस्तबकनमिता कल्पलतिको
सकृद् द्यायन्तस्त्वा दधति शिव चिन्तामणि पदम् ॥१२॥

پنگہ پوشہ پاٹھ شامہ سندر شرکیہ رس سرخ وستر چھک تہ دارانی
چھولتہ محنتہ بہ پوشہ لباسہ رس تنہ بار نمختی تہ شو بھانی
ہی دیوی چھک تہ کلپتہ تر آسونیہ یس اکہ لہ چون دھیان دارانی
سوی شیو روپی چنتا من رتن چانی دیلے کن چھو پراوانی

प्रकाशात्तन्दाभ्यामविदितचरीं मध्य पदवीं
प्रविश्यैतद्वन्द्वं रविशशि समाख्य कवलयन् ।
प्रविश्योर्ध्वं नादं लयदहन भस्मीकृत कुलः
प्रसादात्ते जन्तुः शिवमकुलमृन्म प्रविशति ॥१३॥

اندر اثرت دوشیونی گراس کران گیان کن کربابی کن فیر تھ سو سمنہ
سارنی جکران بھسم چھ کران آردہ ناوس اثرت پوت ویمر تہ اکن کن
اوناشہ شیو پدس پٹھ چھو واتان تمہ پتہ چانی اؤگرہ کن سادھک

षडाधारावर्ते रपरिमित मन्त्रोर्मि पटलै -
श्रवलन्मुद्रा फेनै बहुविध लसद् दैवत भूषैः ।
क्रमस्रोतोभि स्त्वं वहसि परनादा मृत नदीं
भवानि ! प्रत्यगा शिवचिद् मृताब्धि प्रणयिनी ॥१४॥

مدر رانے کف نشہ یلہ تہ نیران 6 چکر آولنہ نشہ منتر ملکوت نشہ
پرہ ناو امرتہ روپہ یلہ چھک دھان کریم روپہ گادو نشہ کریمہ دریادو نشہ
شور روپہ پوت سدرس منتر تہ روزان ہی اموج واتان چھک نوس دریادو

महीपाथो वह्निश्वसन वियादात्मेन्दु रविभि
वैपुभि गस्तांशै रपि तव कियान्मुम्बे ! महिमा ।
अमून्यालोक्यन्ते भगवति न कुत्राप्यणुतरा -

मवस्थां प्राप्नोति त्वयितु परमज्योम वपुषि ॥१५॥

پرتھوی جل اگن وایو ته آکاش
مشتو کن بنا ومنت چھی تره پانے
چانس پریم آکاشکس سروپس
سریہ چن درمہ بیہ بھو آتما
کوتاہ چھو موج بوانی چون ہما
منتر چھنہ ییم تی کوئی وجودس ایوان

मनुष्यास्ति यज्ज्ञो महत इति लोकत्रयमित्
भवाम्मोद्यो मग्ना त्रिगुणलहरी कोटि लुडितम् ।
कटाक्षाश्चेदत्र क्वचन तव मातः करुणया
शरीरी सद्योय व्रजति परमानन्द-तनुताम् ॥१६॥

منش چاروائی ته دیو تریلوکی
کروبر پره ست راج تمہ لہن منتر
یدوے یمن منتر نہ کیسی چون کما کہ
پریم آتندکس سروپس سو جلدی
سمسار سردس منتر چھی بھمت
۳ گن ملکن منتر ڈولہ چھی گیمت
ہی ماما سوز پرا دہ چھو وانا
پریم پید دیلے چانی کن چھو پراوان

कलां प्रज्ञा माद्या समय मनुभूति समरसा
गुरुं पारम्पर्यं विनयमुपदेश शिवकथाम् ।
प्रमाणं निर्वाणं परममतिभूतं परगुह्यं
विधिं विद्यामाहुः सकल-जननीमेव मुनयः ॥१७॥

ہی جلگت ماما منیشور چھی نری وانا
گورہ پریم پراوانی اپدیش شو کتھا
رہسہ گیان مریداتہز بیہ دیدیا شکھتی
کر یا بدھ او انوبو سمتا
پرمان نرمان پرنیکہ ته انمان
جلگت ماما چانی سروپ چھی ییم وانا

प्रलीने शब्दोद्ये तदनुविरते बिन्दु विभवे
ततस्तत्त्वे चाष्टध्वनिभि रनुपाधिन्युपरते ।
श्रिते शक्ते पर्यव्यनु कलिते चिन्मात्रगहना
स्वसंविर्त्तिं योनी रसायति शिवाख्या परतनुम् ॥१८॥

شبد سمودکا و تھ پرتہ بندہ و بھو کا لھ
تتوس پٹھ آتمہ سروپس او یادھی رشتس
شاکھتی مارگک اکثر یہ چھی ییم رطان
سا بھاوک شو سروپس تم پراوان
یشٹھ گیان پت آکاشکس منتر لین کر تھ
نادہ روپہ پره امرتس منتر روکا و تھ
چیتن مانترک ہسہ تم ویرتس کران
تھدس شو سروپس تم سواد کران

परानन्दाकारा निरवधि शिवेश्वर्य वपुषं .

निराकार ज्ञान प्रकृति मुनवच्छिन्न करुणाम् ।
सवित्री लोकानां निरतिशय धामास्पदपदां
भवो वा मोक्षो वा भवतु भवती मेव भजताम् ॥१६॥

حدہ روس پر مہر آئند روپہ چون دھیان
نروکار گیانہ روسہ حدہ روس دیا روپہ
لش بر لہ برشی چھٹے موکھ یا سمسار
شیو ایشوری روپہ لیس مانان
جیو پیسہ کروں لیس ترہ مانان
لیش کوئی روپہ چائی سیوا کران

जगत्काये कृत्वा तमुपि हृदये तच्च पुरुषे
मुमासं बिन्दुस्थं तमुपि परनादाख्य गहने ।
तदेतज्ज्ञानाख्ये तदपि परमानन्द विभवे
महा व्योमाकारे त्वदनुभवशीलो विजयते ॥२०॥

جگت کا پائے منز چھک ہر دیہ ترہ آسویہ
آتمہ پیر شمس منز بندو شہیکت
نادر منز گیان روپ چون آسویہ
ہی جگت ماما جئے کار تمنہی
ہر دیس منز چھک آتمہ دیو روپ
بندس منز چھک پرہ ناو روپ
گیانس منز پرمانند و بھو روپ
یم کرن چون الو بوہما کاشہ روپ

विद्ये विद्ये वेद्ये विविध समये वेद जननि
विचित्रे विश्वाद्ये विनयसुलभे वेद गुलिके ।
शिवाज्ञे शीलस्थे शिवपदवदन्त्ये शिवनिधे
शिवे मातमेह्यं त्वयि वितर भक्तिं निरुपमानम् ॥२१॥

ہی کریا شکھتی گیان شکھتی دودھ
ہی وختر روپی چھک ترہ جگتہ آد
شیو آلتیا مئے منز ترہی بھاو روپی
شہ کوی ترانہ چھک آسویہ ترہ ہی کج
سدانتہ آچار روپ ہی وید ماما
وئے کن ترہ پراوئی ترہ وید ج سار
شیو یو دیوان ترہی ہی ماما
بے حد شکھتی دیتے ہی ماما

विद्ये मुण्डं हृत्वा यदकुरुत पात्रं करतले
हरिं शूलघ्नं यदगमयदंसा भरणताम् ।
अलंचक्रे कण्ठं यदपि गरलेनाम्ब! गिरिशः
शिवस्थायाः शक्ते स्तदिदं मविलं ते विलसितम् ॥२२॥

برہما سند کلہ الگ کرتھ تتھ کلس
 بننے فیکي کوئی بناؤن زیور
 سخت کہوتہ سختی نہ ہر کن تھ شون
 شوس پٹھ ٹھیکیمہ اسی شکستی ہند
 بننے اتھک پاتر بنا وتھ
 ناراین ترشوس پٹھ اور تھ
 ہوٹ لیس پٹھوی شوہر اون
 فی سوروی چونی ولایس چھو آسون

विरिञ्च्याख्या मातः! सूजसि हरिसिद्धा त्वभवसि
 त्रिलोकीं रुद्राख्या हरसि विदधासीश्वर ज्ञानम् ।
 भवन्ती सादाख्या शिवयसि च पाशौघदलिनी
 त्वमेवैका नैका भवसि कृत भेदै गिरिसुते ॥२३॥

برہما نادرہ کن کران پیدہ ترلوکی
 رودرہ نادرہ کن ٹری چھک کران سہار
 سداشیو نادرہ کن جگتس دیوان سکھ
 ہی ہمالہ پتری جی کوئی آستھ
 ناراینہ نادرہ کن چھک ٹرہ تتھ رچھان
 ایشور دشا چھک ٹری دادان
 پاشن ہند سموہ ٹری گالان
 بیرون بیرون کامیون ایک نادرہ باسان

सुतीनां चेतोभिः प्रमुदित कषायै रपि मलाक
 अशक्ये संस्पृष्टं चकित चाकितै रम्ब सततम् ।
 भुतीनां मर्धानः प्रकृति कठिनाः कोमलतरै
 कथं ते विन्दन्ते पद किसलयै पार्वति! पदम् ॥२४॥

ہی ماتا یم منیشور چھی منہ کیو
 تم تی غوج غوج غوج جانن یادن
 اوپہ نشدہ سہاؤ کن کٹھن پاشنہ تم
 گلستو دوشوسیس آسونی
 سپش کرلس پٹھ چھٹی نہ ہیکیون
 چانن چرن ملن ہنرہ جانن پرادون

तद्विद्वतीं नित्या मूढत सरितं पार राङ्गती
 मलात्तोणीं उद्योत्स्रां प्रकृति मनुष्याग्रन्थि मनुनाम् ।
 गिरां दुरा विद्या मविनत कुचो विश्व जननी-
 मपयेन्तां लक्ष्मी मभिदधति सन्तो भगवतीह ॥२५॥

اوزملہ روپ ابار امرت ندی روپ
 وانی نشہ دور ٹری تہنر و دیام روپ
 چھٹی و نان ست زن ہی دیوی چانی
 نرملہ چندرہ ترگن روپ
 گیان کر یا تو نمٹہ جگت ماتا روپ
 یم روپ تہ میرہ انتہہ لخمی روپ

शरीरं सित्यम्नः प्रभृति रचितं केवल मिदं -

मुखं दुखं चयं कलयति पुमांश्चेतन इति ।
स्फुरन् जानानोऽपि प्रभवति न देही रहसितुं
शरीराहंकारं तव समय बाह्यो गिरिसुते ॥२६॥

چھوئی بن پانچہ پوتن شریر بنان
نمود پاٹھ جیو پانچہ انوب کران
چھوٹ جیو چانی انگرہ پوتن تراوان
ہی ہمالہ پتری شریرک اہنکار

पिता माता भ्राता सुहृदनुचरः सदा गृहिणी
वपुः पुत्रो मित्रं धनमपि यदा सा विजहति ।
तदा मै भिन्दाना सपदि भय मोहान्धतमसं
महाज्योत्स्ने! मात भव करुणाया सन्निधिकरो ॥२७॥

شریر پتر پتر گھرہ بیہ دھن
اندر کارس جلد جلد چوٹی بن
نزدیک پھرت ستمکھ نہ بن
مٹول ماجی بھائی بند نوکرتہ گھرہ ہی
یہی وقتہ تراوغم نمی وقتہ بھئے موہ
مہا پرکاشہ روپ بختہ دیانے کن ماجی

सुता दक्षस्यादौ किल सकल मात रुच मुदभूः
स दोषं तं हिंत्वा तदनु गिरिराजस्य तनया ।
अनाद्यन्ता शम्भो रम्यगुणपि शक्ति भगवती
विवाहाज्जयासीत्यहं चरितं वेत्ति तव कः ॥२८॥

دکھی پر جاپتہ مشنری کمار
پتہ بنیکھ تری ہمالہ پتری
زادہ تہ پیمان ہی شہتی بھگو تی
تم چانی پرترہ کوس زانہی
ہی جگت مانا گودہ پتہ آسکھ
دوشہ کن چھنتن سوئی تری تراوغد
آدانتہ رستنس کس شیبوس نشہ چھکنہ
دواہ روسہ وردارھن ترہ شکر

कण स्वदीप्तीनां रवि शशि कुशानु प्रभृतयः
परं ब्रह्म सुखं तव नियत मानन्द कणिका ।
शिवादि शित्यन्ता त्रिवलय तनोः सर्व मुदरे
तवास्ते भक्तस्य स्फुरसि हृदि चित्रं भगवति ॥२९॥

چانی دفتی ہنتر وچھی اکھ رتیرا
سٹون چھوئی اکھ لوکٹ ہشتہ رشتہ
ہی دیوی سریر چن درمہ بیہ کن
پریم پتر چھوئی چانی پتر ہنتر منترہ

شونانہ سندی پٹھ پر تھوی توتس تانیہ
 سارنی ترہ کنڈلنی رویہ روزان
 اس شجر چھو ماج چون بھکتن چھک چھپی
 ہر دس منتر پر کٹ پانٹھ چھکان

त्वया यो जानीते रचयति भवत्यैव सततं
 त्वयैवेच्छत्याम्ब त्वमसि निखिला यस्य तनवः ।
 गता सास्यं शम्भुर्वहति परमं व्योम भवती
 तथाप्येवं हित्वा विहरति शिवस्येति किमिदम् ॥ ३० ॥

چائی کن زانان چائی کن پچھان سوی
 چائی کن سوشیو جکت چھوی بناوان
 تری چھک تس سر و بس چائی کن چھوی
 سوی سوامہ بہاؤس پٹھ و اتان
 یلہ تر و ان ترہ موج تیلہ چانس برہم
 آکاشس منتر لین سیدان
 परः पश्चादन्तर्बहि रूपरिमितं परिमितं
 परे स्थूलं सूक्ष्मं सकलं मुकुलं गुह्यं मुगुह्यम् ।
 दवीयो नैदीयः सदुत्सदिति विश्वं भगवतो
 सदा यशयन्त्याज्ञा वहसि भुवन होम जननीम् ॥ ३१ ॥

بروٹھ پتر اندرہ نبرہ لوک بل موٹہ سکھم
 شیور ویشکھی روپ گفتہ نور و روپ
 دور نزدیک ست است رویہ لیش جکت
 تھہ سر شتی تھت سمہار چھی کرو تانی
 جکتج آگنیا کار ترہ زاننہ ایوان

मयावाः मूष्णीव ज्वलन इव तद्दक्षि कणिकाः
 मयाधौ कल्लोल प्रतिहित महिम्नीव पृषतः ।
 उदेत्योदेत्याम्ब त्वयि सह निजै स्तात्त्विक कुलै-
 भजन्ते तत्त्वोधाः प्रशम मनु कल्प परवशाः ॥ ३२ ॥

برہ سندر کن زن اگنیچہ تمہری زن
 سمندر ان ملکن ہنترہ پانیہ جھک زن
 تھہ پانٹھ شو پٹھ پر تھوی توتس تانیہ
 برتھہ کلیا نٹس اوٹھا و تھہ لٹے سیدان

विधुर्विष्णुर्ब्रह्मा प्रकृतिरणुरात्मा दिनकरः
 स्वभावो जैनैन्दु सुगत मुनि राकाश मनिलः ।
 शिवः शक्तिश्चेति श्रुति विषयतां तामुपगतां
 विकल्पैरेभि स्त्वामुभि दधति सन्तो भगवतीम् ॥ ३३ ॥

چندرہ ویشنو برہما بیہ سرہ
 مایا سبھا و شت جو ترہ آتما
 آکاش والو شوشکتی ہم
 سمندر یو ناو کن من بن
 جھید کن ویدل پٹھ یم و اتان
 ہی موج بوانی جئی چھی سموان

प्रविश्य स्व मार्गं सहज दयया देशिक दृशा
 षडध्व ध्वान्तौघ चिक्कुर गणनातीत कहणाम् ।

परानन्दाकारं समदि शिवयन्ती मापि तन्
 स्वमात्मानं धन्याश्चिरमुपलभन्ते भगवन्तौ ॥ ३४ ॥

قدرتی دیانے کن گورو سنہری نظری کن
 تمہی شہرہ دتی سس سہار اندکار
 ہم شکستی مارگس منہر پردیش کران
 دیانے کن موح چھک ٹرہ گالان
 تمہی بہا گوان موح چھک ٹرہ پراوان
 پرمانند کوئی سکھ دیوان ٹرہ تمہی

शिवस्त्वं शक्तिस्त्वं त्वमसि समया त्वं समयिनौ
 त्वमात्मा त्वं दीक्षा त्वमयं मुणिमादि गुण गुणाः ।

अविद्या त्वं विद्या त्वमसि निखिलं त्वं किमुपरं
 पृथक् तत्त्वं तत्त्वौ भगवति न वीक्षामहे इमे ॥ ३५ ॥

ٹری سہی تھہ زانہ وینہ چھک ٹری
 ٹری انا دکھاشہ سدھی ٹری
 ٹری اوتا چھک اپدیش چھک ٹری
 ٹری اور دیا و دیا جگتک پرا تھہ
 ٹری سہی تھہ زانہ وینہ چھک ٹری
 ٹری انا دکھاشہ سدھی ٹری
 ٹری اوتا چھک اپدیش چھک ٹری
 ٹری اور دیا و دیا جگتک پرا تھہ

असंख्यैः प्राचीनैर्जननि जननैः कर्म विलया-

ज्ञते जन्मन्यन्ते गुरु वपुष मासाद्य गिरिशम् ।

अवाप्याज्ञां शैवी कभतनुरपित्वा विदितवान्

नयेयं त्वत्पूजा स्तुति विरचनेनैव दिवसान् ॥ ३६ ॥

ای ماما سکھ پرا تھہ جنم ہند
 گورو شہرہ سروپ لہتہ شکستی سروپ پرا تھہ
 کرم کلنہ کن اونہہ جنم پرا تھہ
 وارہ پا تھہ موح چون سروپ زان تھہ
 تھہ سیت زہنہ بو دن دن کرا تھہ
 جاتی تو تاتہ پوجا کروں بو روزے

यत् षट्पत्रं कमल मुदितं तस्य या कर्णिकाख्या

योनि स्तरयाः प्रथित मुदरे यत्तदोकार पीठम् ।

तस्मिन्नन्तः कुचभरनतां कुण्डलीतः प्रवृत्ता

श्यामाकारा सकल जननीं सन्तत भावयामि ॥ ३७ ॥

سوا دھن مان چکرس منہر شہرہ دل
 تت منہر اسون ايس چھو بھوک کوش
 پیموش یس چھوی موح آسون
 بیجہ کوشس پٹھ او مکار چہرہ جالے
 کوش کڈلنی چھک شتی ٹرہ روزان
 جگت ماماے ٹری نت یہ سمران
 او مکار چہرہ جالے پٹھ واس کرونی
 تس شامہ سندر مورتی دارونی

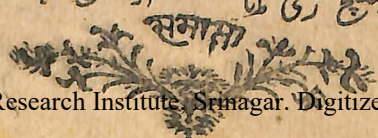
भुवि पयसि कृशानौ मारुते त्वे शशाङ्के

सवितरि यजमानेऽप्यष्टधा शक्ति रेका ।

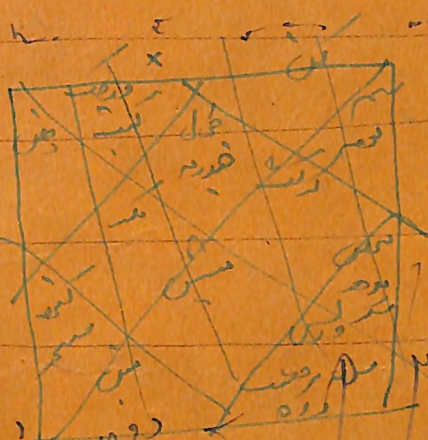
वहति कुचभरार्भा या विनम्रापि विश्वं

सकल जननि सा त्वं पाहि मा मित्युचयम् ॥ ३८ ॥

سیرہ پندرہہ بھجن یمن آطن
 تنہ باہی نمٹھی جگت چہ داران
 سوا دھن مان چکرس منہر شہرہ دل
 تت منہر اسون ايس چھو بھوک کوش
 پیموش یس چھوی موح آسون
 بیجہ کوشس پٹھ او مکار چہرہ جالے
 کوش کڈلنی چھک شتی ٹرہ روزان
 جگت ماماے ٹری نت یہ سمران
 او مکار چہرہ جالے پٹھ واس کرونی
 تس شامہ سندر مورتی دارونی



۲۶ تومہاری پوری جالنی ہے
 ہون صوفی کرے میٹھربانی کرے
 ک ک ر ت



یہ ہے یہی عمل ہے کارخانہ - یہی علم ہے مشائخ
 انہاء و فہم دونوں نامے - دیان اور کیم یہ ہیں نامے